International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

महादेवी वर्मा का काव्य वेदना और रहस्य का सागर है उनकी कृतियों के आधार पर

डॉ० रेखा रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
रोहितास डिग्री कॉलेज
अटेली (महेन्द्रगढ़)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आदिकाल में ज्यों–ज्यों मनुष्य का संपर्क आसपास के वातावरण से होता गया, त्यों–त्यों उसके सामने की भूमि विस्तृत होती गई तथा उसके अनुभवों में वृद्धि हुई। उसकी चेतना परिमार्जित हुई और धीरे–धीरे उसमें स्मृति, इच्छा, अभिव्यक्ति आदि शक्तियों का विकास हुआ।

महादेवी जी ही छायावादियों में एकमात्र वह चिरन्तन भाव यौवना कवियित्री है जिन्होंने नये युग के परिप्रेक्ष्य में राग तत्त्व के गूढ़ संवेदन तथा राग मूल्य को अधिक मर्मस्पर्शी, गंभीर, अंर्तमुखी, तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी हैं।

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना

वेदना शब्द विद् धातु में स्पुट् प्रत्यय लगाकर बना है – जिसका अर्थ शारीरिक पीड़ा न होकर मानसिक या हार्दिक पीड़ा से है। महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी कविता में वेदना को अभिव्यक्ति करने वाली सर्वप्रमुख कवयित्री मानी जाती है। उनके काव्य में वेदना की अधिकता के कारण ही उनको 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। उनके काव्य में व्याप्त, 'वेदना' के विषय में उनके समकालीन कवि सुमित्रानन्दन पंत का कथन है – ''उनके काव्य में सर्वप्रमुख तत्त्व वेदना, वेदना का आनंद, वेदना का सौंदर्य, वेदना के लिए आत्म–समर्पण है। वह तो वेदना की एक छत्र सम्राज्ञी है। कोई सुख उन्हें आत्म–विस्मृत या आत्म तन्मय होने के लिए नहीं चाहिए।

वेदना जब व्यापक स्तर पर फैलती है तभी उसमें सहानुभूति प्रेम तथा जन–कल्याण की उदात्त भावनाओं का उन्मेष होता है। अहं की भावना विस्तृत हो जन–

जीवन से एकाकार हो जाती है। अतः वेदना का अर्थ अपनी कुंठा का रोना नहीं, दूसरे के शोक हृदय में उत्पन्न होने वाली सजीव संवेदना ही'' यही वेदना महादेवी वर्मा को प्रिय है। उनके जीवन तथा काव्य का मूल स्वर है।

संपूर्ण भारतीय साहित्य में वेदना के संवेद्य रूप करुणा का प्रतिष्ठित स्थान रहा है। करुणा रुप में पर्यवसित यह वेदना मानव जीवन में स्थायी तथा शाश्वत रहती हैं। सुख क्षणिक है, शीघ्र नष्ट होने वाला है किन्तु वेदना की प्रवाहिनी अजस्र तथा निरंतर है। यही वेदना जीवन में संघर्ष तथा अनवरत कार्यशीलता की भूमिका उत्पन्न करती है।

स्वयं महादेवी का अपने काव्य में व्याप्त वेदना के विषय में कहना है – ''जीवन में मुझे बहुत दुलार, बहुत आदर व बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है, उस पर पार्थिव दुःख की छाया नहीं पड़ी। कदाचित यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी।''

महादेवी के स्वयं के इस कथन के आलोक में महादेवी के काव्य में व्याप्त वेदना का विवेचन निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है –

1- **अश्रुओं का प्रवाह :** महादेवी जी के काव्य में जो वेदना हमें देखने को मिलती है वह उनकी आँखों से निकलकर पाठक के हृदय तक सीधे पहुंचती है। अश्रुओं के प्रवाह की अधिकता के कारण ही वे स्वयं को 'नीर भरी दुःख की बदली' कहती है।

'विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी कल थी, मिट आज चली।''[1]

2- महादेवी जी ने अपने 'स्मृति की रेखाएँ', चलचित्र के माध्यम से दूसरा रेखाचित्र एक चीनी फेरीवाले का खींचा है। ''चीनी फेरीवाले की अश्रुओं से भरी करुण कहानी व लेखिका के प्रति उसके अगाध स्नेह व विश्वास का संवेदनशील चित्र

उनके रेखाचित्र में देखने को मिलता है। वह लेखिका को 'सिस्तर' संबोधित करता है।''[2] महादेवी जी के चित्त में उसके लिए काफी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3- **मिलन की तीव्र आकांक्षा :** महादेवी जी के काव्य में निःसृत वेदना उनकी अपनी प्रियतम से मिलन की तीव्र आतुरता के कारण है। यही कारण है कि वे बार–बार अपने प्रिय तक से प्रश्न करती है कि तुम कौन हो जो सदा मेरे हृदय में विद्यमान रहते हो, परंतु फिर भी तुम अज्ञात हो।

''कौन तुम मेरे हृदय में, कौन मेरी कसक में नित,
मधुरता भरता अलक्षित, कौन प्यासे लोचनों में,
घुमड़ फिर झरता अपरिचित ?[3] (कौन तुम मेरे हृदय में)

4- **करुणा का समावेश :** महादेवी जी की वेदना संसार की पीड़ा से निःसृत है, अतः उसमें स्वाभाविक तौर पर करुणा का समावेश है। संसार में देखने को तो उसे प्रकृति के एक से एक नमानाभिराम दृश्य दिखाई देते हैं, परन्तु जब वह आम लोगों के सूखे होंठो, जर्जर जीवन व मुरझाई पलकों को देखती हैं तो करुणार्द्र होकर कह उठती हैं –

''देखूं खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे अधरों को,
तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखूँ।
देखूं हिम हीरक हंसते, हिलते नीले कमलों पर,
या मुरझायी पलकों से, झरते आसूं कण देखूं।''[4]

महादेवी जी के मन में उपेक्षिताओं, परित्मकताओं एवं वृद्धाओं के प्रति करुणा की भावना प्रत्येक क्षण उमड़ती दिखाई देती है। उपेक्षिताओं के अंतर्गत महादेवी ने मुख्यतः वेश्याओं को लिया है। इनको जन्म देने वाला यह समाज ही है जो अपनी काम–वासना की पूर्ति के लिए उचित–अनुचित तरीके अपनाता है और अपनी आग बुझाने के बाद लौट कर कभी उनको ताकता भी नहीं।

अपने संस्करण में अभागिन बाल विधवा को लेकर पुरुष जाति में ललकारती हुई महादेवी जी लिखती है –

''बर्बरो ! तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लिया,

पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी।''[5] (अतीत के चलचित्र 6 संस्करण)

महादेवी के काव्य में रहस्य

जिस प्रकार महादेवी के काव्य में वेदना की तीव्रता है, उसी प्रकार आधुनिक कवियों ने उन्हीं के काव्य में रहस्य भावना के दर्शन भी सर्वाधिक उत्कृष्ठ रुप में होते हैं। 'रहस्य' का अर्थ है – 'किसी अज्ञात भेद की बात'। महादेवी के काव्य में यह अज्ञात भेद की बात एक धारणा तथा विचारधारा के रुप में प्रकट होती है। उनके काव्य में व्याप्त रहस्य भावना का विवेचन निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत किया जा सकता है।

1 प्रकृति के साथ तादात्म्य

महादेवी को प्रकृति से असीम प्रेम था। यही कारण है कि वह प्रकृति की अज्ञात सत्ता के विषय में अत्यधिक चिंतन करती थी, उसके प्रति जिज्ञासु रहती थी। यही नहीं प्रकृति में प्रियतम के दर्शन करती थी। वह स्वयं को भी प्रकृति का एक हिस्सा समझती थी। यही कारण है कि वे अपनी कविता में स्वयं को नीर भरी बदली कहती है –

''मैं नीर भरी दुःख की बदली,

स्पंदन में चिर निस्पंदन बसा,

क्रंदन में आहत विश्व हँसा,

नयनों में दीपक से जलते,

पलकों में निर्झरिणी मचली।।''[6] (दुख की बदली)

'दुख की बदली' कविता महादेवी वर्मा की अत्यन्त प्रसिद्ध कविता है। प्रकृति के माध्यम से पीड़ा की स्वीकृति व गायन की यह श्रेष्ठ कविता है। कवयित्री ने वेदना में

ही अपना संसार बसा लिया है – आँखों में दीप जलने का संसार, क्रंदन में दुखी बिम्ब के हंसने का संसार।

2 तीव्र जिज्ञासा

जिज्ञासा रहस्यवाद की प्रारंभिक सीढ़ी है। महादेवी के मन में असीम ईश्वर के प्रति सदैव ही जिज्ञासा रही है। उन्होंने अपनी कविता 'कौन तुम मेरे हृदय में' अपने इस जिज्ञासा भाव की तीव्र अभिव्यक्ति की है। कविता में वे कहती हैं कि जिस प्रकार किसी संगीत का मधुर स्वर बहुत दूर से आता है, उसे सुनकर हृदय में एक जिज्ञासा तथा आकर्षण बना रहता है, उसी प्रकार सुदूर विद्यमान उस परम सत्ता के विषय में सदा उसका माधुर्य ध्वनित होता रहता है –

''गूँजता उर में न जाने,
दूर के संगीत सा क्या,
आज खो निज को मुझे,
खोया मिला, विपरीत–सा क्या ?''[7] (कौन तुम मेरे हृदय में)

3 मिलन की व्याकुलता

महादेवी के रहस्यवाद ने प्रियतम से मिलन की व्याकुलता तथा छटपटाहट के भी प्रत्यक्ष दर्शन होते है, उनकी यही व्याकुलता उनके काव्य में उनकी वेदना प्रकट होती है। प्रियतम से मिलन की व्याकुलता में वह अपने प्रियतम के अलौकिक घर की विशेषताओं का वर्णन करने लगती है तथा अपने घर से उसकी श्रेष्ठता सिंह करने लगती है। वे अपनी कविता 'वे मुस्काते फूल नहीं' में प्रियतम को संबोधित करते हुए कहती भी है –

''वे सूने से नमन नहीं
जिनमें बनते आँसू मोती,
वह प्राणों की सेज, नहीं
जिनमें बेसुध पीड़ा सोती।''[8] (वे मुस्काते फूल नहीं)

भावात्मक रहस्यवाद

महादेवी के काव्य में हालांकि कबीर व जायसी की भांति साधनात्मक रहस्यवाद का अभाव है, परन्तु भावात्मक रहस्यवाद की प्रमुखता है। मुख्यतः वह भावों की ही कवयित्री थी। उनका समस्त चिंतन व मनन भावना पर ही आधारित था। उनके भावात्मक रहस्यवाद के अंतर्गत अलौकिक शक्ति के प्रति जिज्ञासा, दिव्य शक्ति से मिलन की तीव्र उत्कंठा व आत्म–परमात्मा का मिलन एवं उसकी अभिव्यक्ति तीनों ही स्तर परिव्याप्त है। वस्तुतः उनके काव्य में जो रहस्य विद्यमान है, उसका मूल बिंदू जीवन है। उनके भावात्मक रहस्यवाद का श्रेष्ठ उदाहरण उनकी कविता 'कह दे माँ क्या अब देखूं'' में देखा जा सकता, जहाँ वे जीवन के दुःख को निहारने के बदले प्रकृति के सुंदर दृश्यों को देखना नहीं चाहती।

''मकरंद–पगी केसर पर,
जीती मधु–परियाँ ढूँढ,
या उर–पंजर में कण को,
तरसे जीवन शुक देखूँ।''[9]

इसलिए कहा जा सकता है कि 'वेदना' व 'रहस्य' दो ऐसे विषय है, जिनमें आधुनिक काल के कवियों में महादेवी का स्थान न केवल श्रेष्ठ है, अपितु यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं है कि इन क्षेत्रों में अन्य कोई कोई कवि उनके आस–पास तक नहीं फटकता। महादेवी की वेदना में सुख की अनुभूति करने वाली कवयित्री है अतः वे मानव जीवन में व्याप्त दुःख, पीड़ा छटपटाहट आदि को अनुभव करने, उन्हें दूर करने का प्रयास करने की अपेक्षा प्रकृति के सौंदर्य से अभिभूत नहीं होना चाहिए, तो यह कोई चमत्कारपूर्ण बात नहीं है, बल्कि उनकी अपनी एक सामान्य जीवन शैली है, जिसे उन्होंने अपनी कविता 'कह दे माँ अब का देखूँ' में खुलकर स्पष्ट किया है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

संदर्भ सूची

[1] महादेवी वर्मा, नीर भरी दुख की बदली
[2] महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, संस्करण
[3] महादेवी वर्मा, कौन तुम मेरे हृदय में (कविता)
[4] महादेवी वर्मा, कह दे माँ क्या अब देखूँ (कविता)
[5] महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र (संस्करण)
[6] महादेवी वर्मा, नीर भरी दुख की बदलो (कविता)
[7] महादेवी वर्मा, कौन तुम मेरे हृदय में (कविता)
[8] महादेवी वर्मा, वे मुस्कुराते फूल नहीं (कविता)
[9] महादेवी वर्मा, कह दे माँ क्या अब देखूँ (कविता)